

# डॉ. क्रेग कीनर, अधिनियम, व्याख्यान 5

## चमत्कार और इंजीलवाद

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 5 है, चमत्कार और सुसमाचार प्रचार।

मेरे एक बहनोई, जो मेरे दाहिनी ओर बैठे हैं, जहाँ तक आप तस्वीर के सामने देख रहे हैं, मेरे एक बहनोई कैमरून में एक मदरसा में न्यू टेस्टामेंट के प्रोफेसर हैं।

और वह, साथ ही सेमिनरी के डीन, जो कैमरून के याउंडे में एक बड़े चर्च के पादरी भी हैं, उन दोनों ने मुझे इस आदमी, पादरी आंद्रे ममाडजे से मिलवाया, और दोनों ने उसकी विश्वसनीयता की पुष्टि की। और उसने मुझे चंगाई के अनेक वृत्तान्त दिये। उन्होंने मुझे बताया कि भगवान ने उन्हें इस तरह आशीर्वाद दिया है।

इनमें से एक खाता ओलिव नाम की लड़की का था, जो छह साल की थी। और उसे अस्पताल में मृत घोषित कर दिया गया था। और माता-पिता कुछ घटित होने के लिए बेताब थे।

उन्होंने दूसरी राय लेने की कोशिश की, लेकिन डॉक्टरों ने माना कि वह मर चुकी है। ऐसा कुछ भी नहीं था जो किया जा सकता था। इसलिए माता-पिता बच्ची को चर्च में ले आए और उसे पादरी के कार्यालय में ले आए और वहाँ एक मेज पर लिटा दिया।

और सहायक पादरी, क्योंकि वे अभी प्रार्थना सभा शुरू करने के लिए तैयार हो रहे थे, अब शाम हो चुकी थी, बच्चे की मृत्यु के लगभग आठ घंटे बाद थे। सुबह उसकी मौत हो गई। अब शाम के 6 बज चुके हैं उन्होंने उसे मेज पर लिटा दिया।

वे कह रहे थे, कृपया, क्या आप प्रार्थना कर सकते हैं? और सहायक पादरी कह रहा था, यह मुर्दाघर नहीं है। यह कोई अस्पताल नहीं है। यह एक चर्च है।

कृपया, हमें इसके लिए बहुत खेद है, लेकिन कृपया शव को बाहर निकालें। और पादरी आंद्रे ने कहा, नहीं, मुझे प्रार्थना करने दो। मुझे ऐसा लगता है जैसे प्रभु चाहते हैं कि मैं प्रार्थना करूं।

आप बाहर जाएं और प्रार्थना सभा शुरू करें। इसलिए, उनका सहायक प्रार्थना सभा शुरू करने के लिए बाहर गया और उसने ओलिव के लिए प्रार्थना की। खैर, थोड़ी देर बाद प्रार्थना सभा के दौरान, पादरी, माता-पिता और ओलिव सहायक पादरी को चौंकाते हुए प्रार्थना सभा में आए।

अंत में पादरी आंद्रे ने मुझे यह बात बताई, और वैसे, वह पाँच साल बाद मुझे यह बात बता रहे थे। लड़की अभी भी ठीक थी। जब उन्होंने मुझे यह बताया, तो मेरा अनुवादक मेरी ओर मुड़ा और वे फ्रेंच में बात कर रहे थे।

मैं थोड़ी-बहुत फ्रेंच समझ लेता हूँ। मैं फ्रेंच भाषा में उतना अच्छा नहीं हूँ जितना मुझे यह सोचना चाहिए कि मेरी पत्नी फ्रैंकोफ़ोनी है। लेकिन किसी भी मामले में, मेरे पास एक अनुवादक था, लेकिन वह मेरी ओर मुड़ा और उसने कहा, वास्तव में, मैंने यह कहानी पहले भी एक बार सुनी थी।

मैंने इसे सहायक पादरी से सुना। तो वह ठीक रहती है। लेकिन इसके अलावा, मैंने कांगो ब्रेज़ाविल का दौरा किया, जहां मेरी पत्नी रहती है, और उसने मुझे वहां कई लोगों से मिलवाया।

ये सभी एंग्लीज़ इवेंजेलिक डी कांगो के लोग थे। यह कांगो में मुख्य प्रोटेस्टेंट संप्रदाय है, जो कांगो ब्रेज़ाविल में सबसे बड़ा प्रोटेस्टेंट संप्रदाय है। कांगो ब्रेज़ाविल एक काफी छोटा देश है।

उस समय वहां लगभग 30 लाख लोग थे और कैथोलिक वहां प्रोटेस्टेंटों से कहीं अधिक संख्या में थे। तो, यह संप्रदाय, मैं भूल गया कि इसमें कितने लोग थे, लेकिन यह दस लाख से भी कम लोग हैं। ये सभी उदाहरण इस संप्रदाय से हैं, इसलिए नहीं कि वे अकेले हैं जिनके पास ऐसी गवाही है, बल्कि इसलिए कि ये वे लोग हैं जिन्हें मेरी पत्नी जानती थी और जिनसे हम बात करने में सक्षम थे।

पिछली तस्वीर में एक था, पादरी स्वामी, संप्रदाय के अध्यक्ष, के पास अपने बेटे के पालन-पोषण के बारे में एक वृत्तांत था। मेरी पत्नी उसे जानती है। ये अन्य लोग परिवार के बहुत करीबी दोस्त थे।

एक हैं जीन माबियाला। वह कांगो के इवेंजेलिकल चर्च में एक उपयाजक है। उसने मुझे तीन प्रत्यक्षदर्शी विवरण दिये।

मैं उसे एक गवाह के रूप में गिनता हूँ, लेकिन इनमें से कुछ में, अन्य गवाह भी उपलब्ध थे, जिनमें इमैनुएल नाम का कोई व्यक्ति शामिल था, और एक मामले में, मेरे एक बहनोई का नाम भी इमैनुएल था। लेकिन उसने मुझे जो विवरण दिया उनमें से एक एक बच्चे का था जो मृत पैदा हुआ था। कांगो में युद्ध के दौरान जीन माबियाला एक दाई थीं।

उसे विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रशिक्षित किया गया था, और उसने इस बच्चे को जन्म देने में मदद की। बच्ची के गले में गर्भनाल लिपटी हुई थी और वह सांस नहीं ले रही थी। वह पहले से ही भूरे रंग की थी।

यह बिल्कुल स्पष्ट था कि वह पहले ही माँ के गर्भ में मर चुकी थी। पिता बस बाहर गए और ताबूत का निर्माण शुरू कर दिया। लेकिन मामा जीन, जैसा कि उन्हें स्थानीय रूप से बुलाया जाता है, और दो अन्य लोग, मां और एक अन्य महिला जो वहां मौजूद थीं, एक साथ आए और प्रार्थना की।

और जब पिता ताबूत बनाने से वापस आए, तो उन्हें पता चला कि उन्होंने वह सारा काम बिना कुछ लिए किया है क्योंकि बच्चा जीवित था। और उन्होंने उसका नाम मिल्ल्रेस रखा, हजार गुना अनुग्रह। वह अब स्कूल में है।

एक और उदाहरण, और यह एक उदाहरण है, एक तरह से, परिवार के भीतर भी करीब, क्योंकि यह पापा अल्बर्ट बिसौएसौई और उनकी पत्नी, जूलियन बिसौएसौई का एक उदाहरण है। और

यहाँ मैं और मेरी पत्नी हैं। पापा बिसौएसौई, कई साल पहले, कांगो के उत्तर में एंटोम्बे में एक स्कूल निरीक्षक थे।

और एक दिन वह अपने ऑफिस से वापस आ रहा था तो उसने देखा कि एक मृत लड़की के आसपास भीड़ जमा है। यह लड़की, इसके बारे में मुझे बहुत अस्पष्ट रूप से कहने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह लड़की, उन्होंने समय सीमा दी, लगभग आठ घंटे है। और सुबह उसकी मौत हो गई थी।

वे उसे विभिन्न पारंपरिक चिकित्सकों के पास ले गए जिन्होंने विभिन्न जानवरों की बलि दी थी। जड़ी-बूटियाँ एक चीज़ हैं, लेकिन इस बार वे उसे पुनर्जीवित करने की कोशिश में आत्माओं का बलिदान दे रहे थे। उन्होंने उसके मुँह, नाक, आंख और कान में खून लगा दिया था।

और अब उसका शव अल्बर्ट बिसौएसौई के घर के सामने पड़ा हुआ था। और पापा बिसौएसौई ने कहा, तुम इस शव को यहाँ क्यों लाए हो? और उन्होंने कहा, ठीक है, हमने ये सभी अन्य चीज़ें आजमाईं। इसलिए, हम यह देखने का प्रयास कर रहे हैं कि क्या ईसाई ईश्वर कुछ कर सकता है।

और उसने उत्तर दिया, तुम उसे आखिर यहाँ क्यों लाए थे? तुम्हें इन सभी अन्य आत्माओं से हटकर सच्चे और जीवित ईश्वर की ओर मुड़ना चाहिए। वह उसे एक तरफ ले गया। उसने लगभग आधे घंटे तक प्रार्थना की, और फिर उसने उसे जीवित वापस उनके सामने प्रस्तुत कर दिया।

खैर, इसका इस गांव में काफी प्रभाव पड़ा। यहाँ तक कि अगली बार जब कोई बच्चा मर गया, तो वे फिर उसकी तलाश में आए, लेकिन वह शहर से बाहर कहीं और स्कूल का निरीक्षण कर रहा था। उन्हें उसकी पत्नी, जूलिएन मिली, और उन्होंने उससे प्रार्थना करने के लिए कहा।

और उसने किया। और उसने कहा, प्रभु ने उसे ऐसा करने की शक्ति दी क्योंकि ऐसा करने के बाद, वह सोचती थी, आखिर मैंने यह कैसे किया? परन्तु उसने प्रभु से प्रार्थना की जिसने लाज़र को जीवित किया। फिर से उस खाते का जिक्र कर रहा हूँ।

और बच्चा वापस जीवित हो गया। तो, मैंने उनसे पूछा, क्या आपने कभी ऐसे किसी बच्चे के लिए प्रार्थना की है जो जीवन में वापस नहीं आया या किसी और के लिए जो जीवन में वापस नहीं आया? और उन्होंने कहा, नहीं, हमने कभी किसी और के जीवन में वापस आने के लिए प्रार्थना नहीं की। यह बस था, यही वह है जो भगवान ने करने के लिए चुना था, और यह हो सकता है।

ऐसा नहीं है कि यह हमारे जीवन में कोई सामान्य बात है। यह वर्षों पहले की बात है, लेकिन स्थानीय स्तर पर हर कोई इसे जानता था। एंटोनेट मैलोम्बे का यह अगला लेख ऐसा है कि यह शायद कुछ अन्य खातों की तरह नाटकीय नहीं है, लेकिन इसका मुझ पर व्यक्तिगत रूप से अधिक प्रभाव पड़ा है।

मैंने यह वृत्तांत पहले ही सुना था, लेकिन मैं प्रत्यक्षदर्शी से बात करने में सक्षम होना चाहता था। और इसलिए, एंटोनेट मैलोम्बे ने कहानी बताई। जब उसकी बेटी, थेरेसी, लगभग दो साल की थी, उसने चिल्लाकर कहा कि उसे साँप ने काट लिया है।

उसकी मां उसके पास पहुंची और पाया कि वह सांस नहीं ले रही है। गाँव में कोई चिकित्सा सहायता उपलब्ध नहीं थी। और मैं नहीं चाहता कि आपमें से कोई यह सोचे कि ये चमत्कारिक कहानियाँ स्वास्थ्य शिक्षा के लिए रामबाण औषधि हैं, जो स्वास्थ्य संसाधन इत्यादि उपलब्ध कराती हैं।

आपके पास दुनिया के कुछ हिस्सों में चमत्कारों के और भी वृत्तांत हो सकते हैं क्योंकि लोगों को उनकी सख्त जरूरत है, लेकिन आपके पास अभी भी वहां प्रसव के दौरान मरने वाली महिलाओं की संख्या और कई अन्य चीजें हैं। इसलिए, यदि हम चिकित्सा प्रौद्योगिकी उपलब्ध करा सकें, तो ये चमत्कार हमें दिखाते हैं कि ईश्वर को किस प्रकार की चीजों की परवाह है। वह लोगों की परवाह करते हैं और हमें भी उसी चीज की परवाह करनी चाहिए।'

तो, ऐसा नहीं है कि हम इसे पूरा करने के लिए केवल चमत्कारों पर भरोसा कर रहे हैं। चमत्कारों का उद्देश्य यह नहीं है। लेकिन किसी भी मामले में, एंटोनेट मालोम्बे ने पाया कि वह सांस नहीं ले रही थी, गांव में कोई चिकित्सा सहायता उपलब्ध नहीं थी, लेकिन वह जानती थी कि पारिवारिक मित्र, प्रचारक कोको एन'गोमो मोइज़, पास के गांव में मंत्रालय कर रहे थे।

इसलिए, उसने बच्चे को अपनी पीठ पर बांध लिया और पास के एक गांव में भाग गई। और वहां पहुंचने के बाद, कोको मोइज़ ने बच्चे के लिए प्रार्थना की। बच्चा फिर से सांस लेने लगा।

अगले दिन वह ठीक थी और बच्चे के मस्तिष्क को कोई क्षति नहीं हुई। अब वह वयस्क है। वह लगभग मेरी उम्र की है।

उन्होंने कैमरून में मास्टर डिग्री पूरी की और अब वापस कांगो में मंत्रालय कर रही हैं। खैर, जैसा कि पता चला, थेरेसी मेरी पत्नी की बहन है। एंटोनेट मालोम्बे मेरी पत्नी की माँ हैं।

और किसी की सास से सवाल करने की बात नहीं है, लेकिन हमने कोको मोइज़ से सलाह ली और उन्होंने भी दूसरे प्रत्यक्षदर्शी के रूप में कहानी की पुष्टि की। और कांगो से अन्य खाते भी थे। सारा स्पीयर, एक कनाडाई नर्स, जिसे हम अच्छी तरह से जानते हैं, भी बताती है कि मेडिकल टीम द्वारा छोड़ दिए जाने के 20 मिनट बाद प्रार्थना के माध्यम से एक बच्चे को बड़ा किया गया था।

उन्हें उसे छोड़ना पड़ा क्योंकि वे माँ का भरण-पोषण करने का प्रयास कर रहे थे। बच्चे को बाहर निकालने के लिए उन्हें गर्भाशय को फोड़ना पड़ा। लेकिन माँ बच गई और बच्चा चमत्कारिक ढंग से बच गया।

चिकित्सकीय हस्तक्षेप से माँ बच गई। प्रार्थना से बच्चा बच गया। खैर, हम इन अन्य मामलों के बारे में जो भी सोचें, प्रकृति के चमत्कार निश्चित रूप से मनोदैहिक नहीं हैं।

हमारे पास इनमें से कई हैं, उदाहरण के लिए, 17वीं शताब्दी के श्रीलंका का एक विवरण। लेकिन मैं 20वीं सदी के वृत्तांतों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा हूँ। इंडोनेशिया में अनेक वृत्तान्त, और ये अन्य इंडोनेशियाई पुनरुत्थानों के दौरान घटित हुए थे।

आपके पास इंडोनेशिया में 1860 के दशक में, साथ ही 20वीं सदी की शुरुआत में नियास पुनरुद्धार आदि के बारे में कुछ चमत्कारिक रिपोर्टें थीं। लेकिन विशेष रूप से अब मैं पश्चिमी तिमोर में 1960 के दशक के पुनरुद्धार के बारे में बात कर रहा हूँ। बड़े पैमाने पर चमत्कार होने की खबरें आ रही थीं।

एक पश्चिमी शोधकर्ता था। उसे विश्वास था कि कभी-कभी ईश्वर चमत्कार कर सकता है, लेकिन उसे किसी भी प्रकार के चमत्कार पर विश्वास नहीं था, जिसके बारे में वह सुन रहा था कि ऐसा हो रहा है। वह इस पर शोध करने गये।

अब बाद में कुछ और लोग गए और उन्हें कुछ नहीं दिखा। पुनरुद्धार समाप्त हो जाने के बाद वे चले गए। लेकिन वह पुनरुद्धार के बीच में वहां गए और उन्होंने व्यक्तिगत रूप से देखा कि अंधी आंखें खुल गईं और पानी शराब में बदल गया।

और उन्होंने इसके बारे में बात करने के लिए अपनी प्रतिष्ठा दांव पर लगा दी। और इंडोनेशिया से पेट्रस ऑक्टेवियनस और अन्य के अन्य खाते भी आए हैं। लेकिन मैं पापुआ न्यू गिनी से एक विवरण देने जा रहा हूँ।

इसकी सूचना मुझे डोना उरुकुया ने दी थी। और वह मुझे मंत्रालय की एक टीम के बारे में बता रही थी जिसमें वह कांदीवा नाम के एक नेता के साथ काम कर रही थी। यह पापुआ न्यू गिनी में इतिहास के सबसे भीषण सूखे के दौरान था।

वे एक गाँव में आये और कुआँ लगभग सूखा था। आश्चर्य की बात नहीं, इस सूखे के कारण, कुएँ के तल पर केवल कीचड़ था। और लोग हताश थे और टीम को पानी की भी जरूरत थी।

इसलिए, कांदीवा ने प्रार्थना की और फिर वे बिस्तर पर चले गए। और भोर को जब वे उठे, तो एक स्त्री ने जो कुएँ के पास चिल्ला रही थी, उनको जगाया। वह नीचे से थोड़ी सी मिट्टी लेने की कोशिश में कुएँ के पास गई थी ताकि उसे अपने बच्चे को देने के लिए कम से कम थोड़ा सा पानी मिल सके।

कुआँ अब भर गया था और पानी बिल्कुल साफ था, जैसा आमतौर पर बहुत बारिश के बाद होता था। लेकिन कई महीनों से बारिश नहीं हुई थी। ये अगला उदाहरण चीन का है।

वास्तव में ऐसे कई उदाहरण हैं जो चीन से दिए जा सकते हैं। उपचार के संदर्भ में, उनमें से कहीं अधिक जॉन सुंग से जुड़े थे, जो वॉचमैन नी के समान काल से आते हैं। लेकिन वॉचमैन नी यह खास रिपोर्ट भी देते हैं।

इसलिए, मैं इस पर उनका हवाला दे रहा हूँ। वॉचमैन नी, अपनी जवानी के दिनों में, एक टीम के साथ एक गाँव में प्रचार कर रहा था। और गाँव के कुछ लोग टीम के सदस्यों से कह रहे थे, ठीक है, आप चाहते हैं कि हम आपके भगवान पर विश्वास करें, लेकिन हमारा भगवान बहुत शक्तिशाली है।

हमें आपके भगवान की आवश्यकता क्यों होगी? हमारा भगवान इतना शक्तिशाली है कि 200 से अधिक वर्षों से, मुझे लगता है कि लगभग 276 वर्षों से, उस दिन कभी बारिश नहीं हुई जिस दिन पुजारियों ने त्योहार निर्धारित किया था। मैं नहीं जानता कि उनके क्षेत्र में वर्षा ऋतु और शुष्क मौसम कैसा होता था। लेकिन किसी भी मामले में, उन्होंने कहा, आप जानते हैं, हमारे भगवान के त्योहार पर कभी बारिश नहीं होती है।

और हम आपके भगवान पर विश्वास क्यों करेंगे? तो, ईसाइयों में से एक, जो इस समय अकेला था और बाकी समूह के साथ नहीं था, ने कहा, ठीक है, इस साल उस दिन बारिश होने वाली है। और लोग उस पर हँसे। और वह वापस गया और वॉचमैन और अन्य लोगों को बताया, और उन्होंने कहा, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था क्योंकि अब अगर उस दिन बारिश नहीं हुई, तो कोई भी हमारी बात नहीं सुनेगा।

लेकिन फिर भी कोई उनकी बात नहीं सुन रहा था। इसलिए, वे गए और प्रार्थना करने लगे। और निर्धारित दिन पर, सबसे पहले, सूरज निकला था, लेकिन उन्हें बस नेतृत्व महसूस हुआ।

हम पहले ही प्रार्थना कर चुके हैं। यह भगवान के हाथ में है। और फिर उन्हें छत पर बारिश की आवाज़ सुनाई देने लगती है।

और जल्द ही मूसलाधार बारिश हुई, यह इस गाँव में वर्षों में देखी गई सबसे बड़ी बारिश थी। पुजारी ने कहा कि हमसे गलती हो गई। हमें त्योहार को पुनर्निर्धारित करने की जरूरत है।

जिस दिन के लिए उन्होंने त्योहार को पुनर्निर्धारित किया, हालाँकि, इस बार ईसाइयों ने कहा, नहीं, उस दिन भी बारिश होने वाली है। वास्तव में, उस दिन इतनी अधिक बारिश हुई कि सड़कों पर पानी बहने से पुजारी बह गए। उनके देवता की मूर्ति तोड़ दी गयी।

और इसके परिणामस्वरूप उस गाँव में बहुत से लोग ईसाई बन गये। खैर, मेरे एक बहुत करीबी दोस्त हैं, मेरे सबसे करीबी दोस्तों में से एक, डॉ. इमानुएल ई. टॉपसन। वह नाइजीरिया में पश्चिम अफ्रीका के इवेंजेलिकल चर्च में पादरी थे।

उन्होंने सिनसिनाटी के हिब्रू यूनिवर्सिटी कॉलेज से हिब्रू बाइबिल में पीएचडी भी की है। खैर, वह पश्चिमी अफ्रीका के इवेंजेलिकल चर्च के एक चर्च योजनाकार के घर में पले-बढ़े, जो विभिन्न गाँवों में चर्च स्थापित कर रहे थे जो कि अछूते थे। वर्ष 1975 के आसपास, वह और उनका परिवार एक गाँव में थे जहाँ वे अभी-अभी आए थे।

और वह जल्दी से इस घर पर एक छत पाने की कोशिश कर रहा था जिसे वह बना रहा था। और कुछ संशयवादी उसका उपहास कर रहे थे और कह रहे थे, यह वर्षा का मौसम है। आपके पास जो कुछ भी है वह बर्बाद होने वाला है।

यह नष्ट होने वाला है। आपने कहा कि आपके भगवान ने आपको यहां भेजा है, लेकिन हा, हा, हा, आपके पास सब कुछ है। और वह क्रोधित हो गया।

उन्होंने कहा कि जब तक मेरे घर पर छत नहीं होगी तब तक इस गांव में बारिश की एक बूंद भी नहीं बरसेगी। खैर, इसमें चार दिन और लगने वाले थे। और इसलिए वे उस पर हँसे और बाहर चले गए।

और वह परमेश्वर के साम्हने मुंह के बल गिर पड़ा, और कहने लगा, हे परमेश्वर, मैं ने यह क्या किया है? लेकिन अगले चार दिनों तक गाँव के चारों ओर बारिश होती रही, फिर भी गाँव में बारिश की एक बूंद भी नहीं गिरी। और उन चार दिनों के अंत में, वे लोग जो जानते थे कि उनके क्षेत्र में बरसात का मौसम कैसा होता है, उस गाँव में केवल एक व्यक्ति ईसाई नहीं बना था। और आज तक, वह गाँव अभी भी इसके बारे में उस तीव्र घटना के रूप में चर्चा करता है जिसके कारण यह एक ईसाई गाँव बन गया।

अब, मेरे पास पश्चिम के लोगों के भी प्रत्यक्षदर्शी विवरण हैं। लेकिन यह सब कहने के लिए, विद्वान जो दावा करते हैं कि प्रत्यक्षदर्शी ऐसे अनुभवों की रिपोर्ट नहीं कर सकते हैं, वे दुनिया के प्रति अपने स्वयं के बहुत ही सीमित जोखिम को प्रकट करते हैं। सिर्फ इसलिए कि यह आपका अनुभव नहीं हो सकता है इसका मतलब यह नहीं है कि यह किसी और का अनुभव नहीं है।

खैर, कुछ लोग मानेंगे कि ऐसी चीजें होती हैं, लेकिन वे इस बात से इनकार करेंगे कि ये वास्तव में दैवीय कार्य हैं। वे कहेंगे, ठीक है, सच्चा चमत्कार नहीं हो सकता। और आमतौर पर, वे बस अपना शुरुआती बिंदु, एक गैर-आस्तिक या नास्तिक शुरुआती बिंदु, या कभी-कभी एक ईश्वरवादी शुरुआती बिंदु मान रहे हैं।

ठीक है, हां, एक ईश्वर था जिसने मूल रूप से चीजों को स्थापित किया था, लेकिन वह ईश्वर दुनिया की परवाह नहीं करता है, दुनिया में हस्तक्षेप नहीं करता है, आज दुनिया में कार्य नहीं करता है। बहुत से लोग जो इसे एक पूर्वधारणा के रूप में बताते हैं, ऐतिहासिक रूप से यह भी नहीं जानते कि यह धारणा कहां से आई है। लेकिन आम तौर पर इसका पता डेविड ह्यूम से लगाया जाता है।

डेविड ह्यूम ने तर्क दिया कि चमत्कार मानवीय अनुभव का हिस्सा नहीं थे। उनके समय में अन्य लोग भी थे जिन्हें इस बिंदु पर अधिक प्रेरक माना जाता था, लेकिन एक दार्शनिक के रूप में ह्यूम के कद के कारण ही आने वाली पीढ़ियों में इसे व्यापक रूप से स्वीकार किया गया। डेविड ह्यूम चमत्कारों को प्राकृतिक कानून का उल्लंघन मानते थे।

यह इसे कहने का एक नाटकीय तरीका था। इतिहास में कभी भी किसी ने भी इसे सामान्य रूप से इस तरह से नहीं रखा था, क्योंकि यह ऐसा था जैसे कह रहा हो कि भगवान ऐसा करने के लिए

एक कानून तोड़ रहे होंगे। यह उस तरीके के विपरीत है जिस तरह पहले के विचारकों ने चमत्कारों को परिभाषित किया था।

वास्तव में, अधिकांश प्रारंभिक ज्ञानोदय वैज्ञानिक ईसाई थे। तो यह एक दार्शनिक मुद्दा है, वैज्ञानिक मुद्दा नहीं। लेकिन उनके तर्क करने का तरीका यह था।

चमत्कार प्राकृतिक नियम का उल्लंघन करते हैं। यह उनके निबंध का पहला भाग है। चमत्कार प्राकृतिक नियम का उल्लंघन करते हैं।

प्राकृतिक नियम का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। इसलिए, चमत्कार नहीं होते। खैर, कौन कहता है कि ईश्वर कार्य नहीं कर सकता, परिवर्तन नहीं कर सकता, या यदि आप चाहें तो भाषा का उपयोग कर प्राकृतिक कानून का उल्लंघन कर सकते हैं?

ह्यूम ने यह स्वीकार किए बिना कि यह एक पूर्वधारणा है, बस यह पूर्वकल्पना कर ली है। वह सिर्फ अपनी राय बता रहे हैं, कोई तर्क नहीं दे रहे हैं। यह एक गोलाकार प्रकार का तर्क है।

प्राकृतिक कानून का उल्लंघन करने वाले चमत्कारों के बारे में ह्यूम के अधिकांश तर्क प्राकृतिक कानून की परिभाषा पर निर्भर करते हैं। आधुनिक भौतिकी ने प्राकृतिक कानून के प्रति ह्यूम के निर्देशात्मक दृष्टिकोण को कमजोर कर दिया है। आज इसे आमतौर पर वर्णनात्मक ढंग से व्यवहार किया जाता है।

उनका तर्क माना जाता है कि आगमनात्मक है, लेकिन जैसा कि विद्वान अक्सर ध्यान देते हैं, यह वास्तव में परिपत्र है। उनका कहना है कि अनुभव से पता चलता है कि कोई चमत्कार नहीं होता। इसलिए, यदि आपके पास चमत्कारों के लिए प्रत्यक्षदर्शी दावों का अच्छी तरह से समर्थन है, तो हम उन्हें अस्वीकार कर सकते हैं क्योंकि आप उन पर निर्भर नहीं रह सकते क्योंकि मानव अनुभव, समान मानव अनुभव हमें दिखाता है कि हम चमत्कार की उम्मीद नहीं कर सकते हैं।

खैर, यह एक गोलाकार तर्क है क्योंकि आप कह रहे हैं कि मानव अनुभव एक समान है और फिर उन सभी उदाहरणों को ध्यान में रखने के बजाय समझा रहे हैं जो आपके प्रतिमान में फिट नहीं बैठते हैं। यह एक गोलाकार तर्क है, और यह विशेष रूप से उनके निबंध के दूसरे भाग में है। और हम इसे विशेष रूप से तब देख सकते हैं जब वह ऐसे उदाहरणों का हवाला देता है जो उसे ज्ञात थे।

वह पास्कल की भतीजी का उदाहरण देते हैं जिसकी आंखों में जलन हो रही थी। यदि आपने दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया है तो आपने संभवतः डेविड ह्यूम के बारे में सुना होगा। आपने संभवतः ब्लेज़ पास्कल के बारे में सुना होगा, जो एक प्रतिभाशाली गणितज्ञ होने के साथ-साथ एक दार्शनिक भी थे।

पास्कल ईसा मसीह में दृढ़ विश्वास रखता था। खैर, पास्कल की भतीजी की आँखों में जलन की समस्या थी। इससे दुर्गंध आ रही थी।

यह बात उसके आसपास के सभी लोगों को पता थी। वह तुरंत और सार्वजनिक रूप से ठीक हो गई। इस मामले में, यह तब था जब उसे क्रूस पर यीशु के कांटों के मुकुट से एक पवित्र कांटा छुआ गया था।

अब, व्यक्तिगत रूप से, मैं नहीं मानता कि यह वास्तव में यीशु के मुकुट से निकला एक पवित्र कांटा था। मुझे नहीं लगता कि यह इतने लंबे समय तक टिक पाया होगा। मुझे नहीं लगता कि इसे शुरुआत में ही संरक्षित किया गया होगा।

और मुझे लगता है कि मार्टिन लूथर शायद अपने समय में प्रचुर संख्या में अवशेषों के प्रचलन के बारे में सही थे। उनकी एक टिप्पणी यह थी कि आज सैक्सोनी में हर घोड़े के जूते के लिए यीशु के पवित्र क्रॉस की पर्याप्त कीलें घूम रही हैं। लोग अवशेषों में बहुत रुचि रखते थे, लेकिन यह उसकी आस्था के लिए एक संपर्क बिंदु था।

वह तुरंत और सार्वजनिक रूप से ठीक हो गई। फ्रांस की राजमाता ने इसकी जांच के लिए अपने चिकित्सक को भेजा। उन्होंने सत्यापित किया कि वह वास्तव में चमत्कारिक रूप से ठीक हो गई थी।

अब, इस पर पास्कल की प्रतिक्रिया थी, ठीक है, यह चिकित्सकीय रूप से प्रलेखित है। इस उपचार को सार्वजनिक रूप से प्रमाणित किया गया था। इसे बहुत विश्वसनीय गवाहों द्वारा प्रमाणित किया गया था।

वह जिस तरह की बातें कहता है, अगर आप मुझे उस तरह का मामला बताएं तो मैं उस पर विश्वास कर लूंगा। उन्होंने कहा, हमारे पास ये सभी चीजें हैं और हम जानते हैं कि यह सच नहीं है। तो, हम किसी अन्य पर विश्वास क्यों करेंगे? और फिर वह आगे बढ़ सका।

भला, वह इससे कैसे बच सकता था? क्योंकि यह मठ जहाँ वह ठीक हुई थी, जैनसेनिस्टों से जुड़ा था जो उस काल के जेसुइट्स के लिए बहुत अधिक ऑगस्टिनियन थे। और वे प्रोटेस्टेंटों की तुलना में बहुत अधिक कैथोलिक थे। इसलिए उन्हें कोई पसंद नहीं आया।

और ह्यूम के समकालीन जनसेनिस्ट संघों के कारण इसका बचाव करने की कोशिश नहीं करने वाले थे। लेकिन यह यीशु में विश्वास के माध्यम से किया गया उपचार था। ह्यूम केवल नास्तिकता या ईश्वरवाद की परिकल्पना करते हैं, यह कहने के लिए नहीं कि उन विषयों पर उनके सटीक विचार क्या थे, बल्कि वह बिना बताए अपने तर्क को कार्यान्वित करने की परिकल्पना करते हैं।

उन्होंने स्पष्ट रूप से समकालीन ईसाई विज्ञान और क्षमाप्रार्थी के विरुद्ध अपना तर्क प्रस्तुत किया। इसहाक न्यूटन और रसायन विज्ञान के जनक रॉबर्ट बॉयल जैसे लोगों ने वास्तव में विज्ञान का उपयोग इस तरह से किया कि उनका मानना था कि यह प्राकृतिक रहस्योद्घाटन के साथ मेल खाता है, यह विश्वास करते हुए कि भगवान ने ये चीजें की हैं। लेकिन ह्यूम का तर्क इतना गोलाकार है कि कैम्ब्रिज, कॉर्नेल, ऑक्सफ़ोर्ड, इत्यादि द्वारा प्रकाशित चमत्कारों पर ह्यूम के लिए हाल ही में कई बड़ी दार्शनिक चुनौतियाँ आई हैं।

इसलिए, अकादमिक दर्शन की जीवंत दुनिया में, ह्यूम को काफी चुनौती दी गई है। अब, ऑक्सफोर्ड द्वारा प्रकाशित पुस्तक का शीर्षक ह्यूम्स एबजेक्ट फेल्योर था। और एक आलोचनात्मक समीक्षक ने कहा, अब, इस लेखक को चमत्कारों के बारे में ह्यूम का तर्क पसंद नहीं है क्योंकि यह लेखक एक ईसाई है।

जिस पर लेखक ने जवाब दिया, मैं वास्तव में शब्द के किसी भी पारंपरिक रूढ़िवादी अर्थ में ईसाई नहीं हूँ। मैंने बस सोचा कि यह एक बुरा तर्क था। गवाहों को स्वीकार करने के खिलाफ ह्यूम के तर्क का एक हिस्सा, जैनसेनिस्टों की बात छोड़ दें, यह है कि केवल अज्ञानी और बर्बर राष्ट्र ही चमत्कारों की पुष्टि करते हैं।

अगर आज किसी ने ऐसा कहा है, तो हम उस व्यक्ति को जातीय-केंद्रित सांस्कृतिक कट्टरपंथी कहेंगे। और ह्यूम के मामले में, यह सच था। ह्यूम अपनी यहूदी विरोधी भावना के लिए जाने जाते थे।

वह निश्चित रूप से गुलामी की वकालत करने के लिए जाने जाते थे। वास्तव में, ईसाई उन्मूलनवादियों ने ह्यूम के विरुद्ध तर्क दिया था। और आम तौर पर एक दार्शनिक के रूप में उनके कद के कारण, गुलामी के पक्ष में उनके तर्कों में बहुत वजन था।

लेकिन ह्यूम को रंग के असाधारण व्यक्तियों पर संदेह था। उन्होंने कहा, आप जानते हैं, सभी महान सभ्यताएं, सभी आविष्कार, कला, संगीत, साहित्य की सभी महान कृतियां, वे सभी श्वेत सभ्यताओं से आई हैं। वे सभी श्वेत, खैर, मुख्यतः श्वेत यूरोपीय सभ्यताओं से, लेकिन श्वेत सभ्यताओं से आए हैं।

वह चीन, भारत, अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका और मध्य अमेरिका के महान साम्राज्यों से अनभिज्ञ लग रहा था। लेकिन किसी भी मामले में, ह्यूम ने यहां तक कहा कि, आप जानते हैं, हमारे यहां ब्रिटिश साम्राज्य में पीढ़ियों से गुलाम हैं और उनमें से एक ने भी शिक्षा का कोई बड़ा दर्जा हासिल नहीं किया है। ठीक है, यदि आप लोगों को शिक्षा प्राप्त नहीं करने देंगे, तो वे इसे कैसे प्राप्त करेंगे? उसने कहा, तुम्हें पता है, यह एक जमैका का निवासी है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह कविता सुना सकता है, लेकिन कोई भी तोता जो सुनता है उसे दोहरा सकता है।

ये डेविड ह्यूम कह रहे हैं। और जिस जमैका का उन्होंने उल्लेख किया वह फ्रांसिस विलियम्स थे, जिन्होंने वास्तव में अंग्रेजी और लैटिन में अपनी कविता लिखी थी।

तो, ह्यूम एक बहुत ही जातीय केंद्रित शुरुआती बिंदु से आ रहे थे। वह सर्कल को बहुत संकीर्ण रूप से परिभाषित करता है और कहता है, ठीक है, मेरे सर्कल में किसी को भी ये अनुभव नहीं हुए हैं और इसलिए मेरे लिए यह विश्वास करना तर्कसंगत नहीं है कि ये अनुभव हुए हैं। उनके कुछ आलोचकों ने जवाब दिया कि सिर्फ इसलिए कि यह आपके सर्कल में नहीं हुआ है इसका मतलब यह नहीं है कि यह किसी के सर्कल में नहीं हुआ है। देखिए, हमारे पास उन चीजों की प्रत्यक्षदर्शी रिपोर्टें हैं जो आपके सर्कल से परिचित नहीं हैं।

वह कहते हैं, ठीक है, मैं उन पर विश्वास नहीं करने वाला क्योंकि वे मेरे दायरे में नहीं हैं। मेरे लिए उन पर विश्वास करना तर्कसंगत नहीं है। 20वीं सदी के मध्य में रुडोल्फ बुल्टमैन, बुल्टमैन नहीं थे, मुझे जो कुछ भी पता है उससे यह विश्वास करने का हमारे पास कोई कारण नहीं है कि ह्यूम की तरह ही बुल्टमैन किसी भी मामले में जातीय केंद्रित थे।

लेकिन बुल्टमैन ने कहा कि परिपक्व आधुनिक लोग चमत्कारों में विश्वास नहीं करते हैं। बिजली की रोशनी और वायरलेस का उपयोग करना असंभव है, मुझे लगता है कि उनका मतलब टेलीग्राफ मशीन था, और आत्माओं और चमत्कारों की नए नियम की दुनिया में विश्वास करना असंभव है। बुल्टमैन ने कहा कि आधुनिक दुनिया चमत्कारों से इनकार करती है और इस तरह आधुनिक दुनिया से सभी पारंपरिक यहूदियों, ईसाइयों, मुसलमानों, पारंपरिक आदिवासी धर्मवादियों, भूतवादियों और मूल रूप से उनके 20वीं सदी के मध्य के पश्चिमी अकादमिक अभिजात वर्ग और उनके द्वारा आकार लिए गए लोगों को छोड़कर सभी को बाहर कर दिया गया है।

लेकिन कई लोगों ने इस पर प्रतिक्रिया दी है। जस्टो गोंजालेज, लेटिनो चर्चों का हवाला देते हुए बताते हैं कि बुल्टमैन जिसे असंभव घोषित करते हैं वह न केवल संभव है, बल्कि बार-बार होता है। मलेशिया के हाल ही में सेवानिवृत्त मेथोडिस्ट बिशप हुआ युंग का तर्क है कि बुल्टमैन की समस्या एक पश्चिमी समस्या है।

ऐसा कुछ नहीं है, यहां एशिया में हमें वास्तव में आत्माओं और उस जैसी चीजों पर विश्वास करने में कोई समस्या नहीं है। फिलिप जेनकिंस ने ऑक्सफोर्ड द्वारा प्रकाशित अपनी पुस्तकों में लिखा है कि वैश्विक दक्षिण में ईसाई धर्म अलौकिक के तत्काल कामकाज में काफी रुचि रखता है। खैर, ये ह्यूम द्वारा बहिष्कृत लोग समूह हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि बुल्टमैन द्वारा।

बुल्टमैन को शायद इन बातों की जानकारी नहीं थी। लेकिन आज उपचार के दावे कितने व्यापक हैं? ह्यूम को इसकी जानकारी नहीं रही होगी, लेकिन आज हमारे पास यह जानकारी उपलब्ध है और हो रही है। आज उपचार के दावे कितने व्यापक हैं? ठीक है, अगर हम उस जोर के लिए जाने जाने वाले कुछ चर्चों, पेंटेकोस्टल और करिश्माई चर्चों से शुरू करते हैं, तो इस पर प्रमुख अकादमिक अध्ययन किए गए हैं, उदाहरण के लिए ऑक्सफोर्ड द्वारा।

और 2006 में प्यू फोरम सर्वेक्षण हुआ था। प्यू फोरम धर्म आदि के सर्वेक्षण के लिए एक बहुत सम्मानित सर्वेक्षण संस्थान है। और उन्होंने केवल 10 देशों में पेंटेकोस्टल और करिश्माई का सर्वेक्षण किया, और ये 10 देश अकेले थे, ऑस्ट्रेलिया और अंटार्कटिका को छोड़कर प्रत्येक महाद्वीप से एक।

और इसलिए अकेले इन 10 देशों से, और अकेले इन 10 देशों में पेंटेकोस्टल और प्रोटेस्टेंट करिश्माई लोगों के लिए, दैवीय उपचारों को देखने का दावा करने वाले लोगों की अनुमानित कुल संख्या लगभग 200 मिलियन है। अब, इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह हो सकती है कि सर्वेक्षण में, तुलना के कारणों से, अन्य ईसाइयों का भी सर्वेक्षण किया गया जो पेंटेकोस्टल या

करिश्माई नहीं थे या खुद को उस तरह से परिभाषित नहीं करते थे। और इन देशों में लगभग 39% अन्य ईसाइयों का दावा है कि उन्होंने दैवीय उपचार देखे हैं।

अब, अगर यह कहीं भी प्रतिनिधि के करीब है, तो शायद दुनिया भर में एक तिहाई से अधिक ईसाई ऐसे होंगे जो खुद को पेंटेकोस्टल या करिश्माई के रूप में नहीं पहचानते हैं और दावा करते हैं कि उन्होंने दिव्य उपचारों को देखा है। जो भी मामला हो, हम शायद उन करोड़ों लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो दावा करते हैं कि उन्होंने दैवीय उपचार देखे हैं। यह संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे पश्चिमी देशों में भी सच है, जहां 34% अमेरिकी दावा करते हैं कि उन्होंने दैवीय या अलौकिक उपचार देखा या अनुभव किया है।

अब, यह सिर्फ ईसाई नहीं है। इनमें यहां के हिंदू भी शामिल हैं, हालांकि यहां संयुक्त राज्य अमेरिका के हिंदुओं की तुलना में ईसाइयों की संख्या काफी अधिक है। मुद्दा यह नहीं है कि इन दावों में किस अनुपात में दैवीय गतिविधि या चमत्कार शामिल हैं।

वास्तव में ऐसा कोई नहीं है जो यह कहे कि इनमें से प्रत्येक दावा वास्तव में चमत्कार है। कोई भी यह दावा नहीं करेगा कि हर कोई सच बोल रहा था और कोई भी यह दावा नहीं करेगा कि हर कोई जो सच बोल रहा था और उसने सोचा कि यह एक चमत्कार है, इसे समझाने का यही एकमात्र तरीका है या कभी-कभी इसे समझाने का सबसे अच्छा तरीका भी है। और ईश्वर अन्य कारणों से भी कार्य कर सकता है।

इसलिए, ऐसे बहुत से मामले हैं जहां हमारे पास यह कहने का कोई तरीका नहीं है, ठीक है, यह केवल यही है या केवल वही है। लेकिन किसी भी मामले में, मुद्दा यह नहीं है कि इनमें से किस अनुपात में दैवीय गतिविधि या चमत्कार शामिल हैं। मुद्दा यह है कि क्या ह्यूम जैसा कोई व्यक्ति वैध रूप से इस आधार से शुरुआत कर सकता है कि समान मानव अनुभव चमत्कारों को बाहर करता है।

आप यह कैसे कह सकते हैं कि यह एकसमान है जबकि आपके पास करोड़ों प्रतिदावे हैं? आप कम से कम उन प्रतिवादों में से कुछ पर शोध शुरू करने के लिए बाध्य हैं, विशेष रूप से कुछ अधिक नाटकीय लोगों पर, विशेष रूप से उनमें से कुछ बेहतर प्रमाणित लोगों पर। और यह केवल ईसाइयों के बीच ही नहीं है, बल्कि लाखों गैर-ईसाइयों को इस हद तक आश्चस्त किया गया है कि उन्होंने इन असाधारण उपचारों के कारण सदियों से चली आ रही पैतृक मान्यताओं को बदल दिया है। उपरोक्त सर्वेक्षण में शामिल 10 देशों में चीन शामिल नहीं था।

कुछ कारणों से सर्वेक्षण करना अधिक कठिन था। लेकिन फ्री सेल्फ चर्च से संबद्ध चाइना क्रिश्चियन काउंसिल के एक स्रोत ने अनुमान लगाया कि पिछले 20 वर्षों में सभी नए रूपांतरणों में से लगभग आधे, यह स्रोत वर्ष 2000 के आसपास से आए हैं, इसलिए 1980, 1990 के दशक से, उन सभी में से लगभग आधे नए रूपांतरण उस चीज़ के कारण थे जिसे वे विश्वास उपचार अनुभव कहते थे। ग्रामीण घरेलू चर्चों में, कुछ ने 90% के करीब आंकड़े होने का दावा किया है।

यह संभवतः घरेलू चर्च नेटवर्क पर निर्भर करता है, संभवतः चीन के क्षेत्र पर निर्भर करता है। लेकिन किसी भी मामले में, मैं सत्यापित नहीं कर सकता कि यह 50% है, या 90%। मैं किसी भी स्थिति में प्रतिशत की पुष्टि नहीं कर सकता।

लेकिन हम शायद उन लाखों लोगों के बारे में बात कर रहे हैं, जो लोग ईसाई परिसर से शुरू नहीं हुए, लेकिन जो सामान्य से कुछ अलग पहचानते हैं, जिस तरह से लोग आम तौर पर बेहतर होते हैं, उससे कुछ अलग, सामान्य धार्मिक रूप से उन्होंने जो अपेक्षा की थी उससे कुछ अलग। या अन्य अनुष्ठान प्रथाओं, कि वे यीशु के अनुयायी बनने के लिए कुछ बिंदुओं पर सदियों से चली आ रही परंपरा को बदलने के लिए तैयार थे। 1981 में चेन्नई में एक अध्ययन किया गया था, और फिर, सर्वेक्षण हमेशा सटीक नहीं होते हैं, लेकिन कम से कम इस अध्ययन के अनुसार, चेन्नई, जिसे उस समय मद्रास कहा जाता था, में 10% गैर-ईसाइयों ने बताया कि जब किसी ने उनके लिए यीशु में प्रार्थना की तो वे ठीक हो गए। नाम। इसलिए, कुछ लोग ठीक होने पर ईसाई बन गए।

कुछ लोग ठीक होने पर ईसाई नहीं बने, लेकिन उन्होंने तब भी स्वीकार किया कि वे ठीक हो गए थे जब किसी ने उनके लिए यीशु के नाम पर प्रार्थना की। बस इसका एक उदाहरण देने के लिए, मेरे पिछले छात्रों में से एक, जिसे मैंने एक मदरसे में पढ़ाया था, भारत से आता है, बीमारों के लिए प्रार्थना के माध्यम से, उसका बैपटिस्ट चर्च मुट्टी भर लोगों से बढ़कर लगभग 600 हो गया, जिनमें ज्यादातर हिंदू धर्मांतरित थे। मुझे इस तरह के बारे में संयोग से पता चला।

मैं वास्तव में शुरू में इसके बारे में नहीं पूछ रहा था, लेकिन जिस कमरे में पादरी इज़राइल की यह तस्वीर ली गई थी, मैं अभी-अभी बाहर से आया था और मुझे बहुत तेज़ सिरदर्द हो रहा था। उसने कहा, हे भाई, मुझे तुम्हारे लिए प्रार्थना करने दो। मैंने कहा, ठीक है, आप प्रार्थना कर सकते हैं।

उसने प्रार्थना की और कुछ नहीं हुआ। मैंने कहा, मुझे क्षमा करें, कुछ नहीं हुआ। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे कोई आस्था नहीं है।

उसने कहा, अरे नहीं भाई, यहां ये नहीं चलता। भारत में मैं जिनके लिए प्रार्थना करता हूं वे ठीक हो जाते हैं क्योंकि ये अनमोल लोग, उनमें से अधिकांश, यीशु के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते हैं और भगवान उन पर अपना प्यार लुटा रहे हैं ताकि उन्हें यह जानने का मौका मिल सके कि वह उनसे कितना प्यार करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि वह अन्यत्र लोगों से प्यार नहीं करता।

और तभी उसने मुझे इसके बारे में बताना शुरू किया। उन्होंने कहा, भाई, अगर आप भारत आते हैं तो लोगों के ठीक होने के लिए प्रार्थना करने लगते हैं। मैंने कहा, क्या आप गंभीर हैं? उन्होंने कहा, ईश्वर बस यही चाहता है कि ये लोग उसके प्रेम को जानें।

खैर, अंततः मेरा सिरदर्द दूर हो गया, जाहिर है, लेकिन तभी उसने मुझे अपनी कहानी बतानी शुरू की। जाने-माने इंजील विद्वान जेपी मोरलैंड बताते हैं कि पिछले तीन दशकों में दुनिया भर में तेजी से इंजील विकास हुआ है, इसका 70% तक संकेत और चमत्कार के साथ घनिष्ठ रूप से

जुड़ा हुआ है। उससे तीन दशक पहले भी, फुलर सेमिनरी में एक थीसिस लिखने वाले ने दुनिया भर का प्रतिनिधित्व करने वाले 350 से अधिक अन्य थीसिस और शोध प्रबंधों का सर्वेक्षण किया, कई अन्य मिशनरियों का साक्षात्कार लिया, दुनिया भर में चर्च के विकास में संकेतों और चमत्कारों के और अधिक विवरण खोजे। जितना वह संभवतः उपयोग कर सकता था।

केवल बाइबल पढ़ने वाले लोग, प्रार्थना करने वाले लोग और भगवान नाटकीय रूप से उत्तर देते हैं, सभी जानबूझकर नहीं, इसके लिए विचार-विमर्श करते हैं, लेकिन विशेष रूप से नहीं, लेकिन अधिकतर यह अभूतपूर्व क्षेत्रों में हुआ जहां नई जमीन तोड़ी जा रही थी क्योंकि लोग पहली बार सुसमाचार सुन रहे थे। ये स्थितियाँ बहुत हद तक वैसी ही हैं जैसी हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं। ईश्वर कहीं भी प्रार्थना का उत्तर दे सकता है और कभी-कभी कहीं और नाटकीय चीजें भी कर सकता है।

लेकिन, आप जानते हैं, जेम्स अध्याय पांच जिस प्रकार के उपचार के बारे में बात करता है, आप जानते हैं, आप बीमारों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं, बीमारों को धीरे-धीरे ठीक किया जा सकता है, बीमारों को चिकित्सा साधनों के माध्यम से ठीक किया जा सकता है। यह अभी भी प्रार्थना का उत्तर है। लेकिन ये नाटकीय प्रकार के संकेत किसी का ध्यान आकर्षित करने के लिए होते हैं।

यदि वे विश्वास करने के इच्छुक हैं, तो इसका उद्देश्य उनका ध्यान आकर्षित करना है ताकि वे संदेश सुन सकें ताकि वे विश्वास कर सकें। कभी-कभी लोग नाटकीय रूप से नकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया देते हैं, उत्पीड़न करते हैं। हम इसे अधिनियमों की पुस्तक में देखते हैं, लेकिन संकेत ऐसी चीजें हैं जो आपका ध्यान आकर्षित करती हैं।

इसलिए, हम इन विशेष प्रकार के संकेतों को अक्सर सुसमाचार प्रचार के दौरान और बड़े पैमाने पर गैर-प्रचारित क्षेत्रों में देखते हैं क्योंकि लोग पहली बार सुसमाचार सुन रहे होते हैं। यह अतीत में भी सच था। कई चर्च फादरों ने उपचार और भूत भगाने के प्रत्यक्षदर्शी होने का दावा किया जो कई बहुदेववादियों को परिवर्तित कर रहे थे।

और येल इतिहासकार, रैमसे मैकमुलिन, उन्होंने जो खोजा उससे पूरी तरह से खुश नहीं थे, लेकिन उन्होंने अपने शोध के माध्यम से पता लगाया कि यह तीसरी और चौथी शताब्दी में ईसाई धर्म में रूपांतरण का प्रमुख कारण था, उपचार और भूत-प्रेत। यह इतिहास में कई अन्य समयों पर भी प्रमुख था। 20वीं शताब्दी से एक उदाहरण देने के लिए, यह 1907 के आसपास कोरियाई पुनरुद्धार की एक प्रमुख विशेषता थी, मुख्य रूप से प्रेस्बिटेरियन के बीच, फिर से, आपको यह दिखाने के लिए कि यह कितना व्यापक था।

दिलचस्प बात यह है कि कई पश्चिमी मिशनरी जो इस समय कोरियाई ईसाइयों के बीच काम कर रहे थे, उन्हें यह विश्वास करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था कि चमत्कार अब नहीं होते हैं और राक्षस या आत्माएं सिर्फ मनोवैज्ञानिक चीजें हैं, कि उनका वास्तव में अस्तित्व नहीं है। और इसलिए जब कोरियाई ईसाई यह कह रहे थे तो उन्होंने इसे गंभीरता से लिया और उन्होंने एक अध्ययन शुरू किया। लेकिन अध्ययन यह कहते हुए वापस आया कि वास्तव में चमत्कार हुए हैं।

और कोरियाई ईसाइयों ने कुछ मिशनरियों को यह विश्वास दिलाने के लिए धर्मांतरित किया कि ये चीजें हो रही थीं। अब, इस बिंदु पर, मैं चमत्कारों की विश्वसनीयता से परे जाना चाहता हूँ, जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, और ल्यूक-एक्ट्स की एकता के बारे में कुछ बात करना चाहते हैं, और काम एक साथ कैसे फिट बैठता है। और मैं आपको सिर्फ नमूने देने जा रहा हूँ।

तो, आप ल्यूक की साहित्यिक परिष्कार को देख सकते हैं। यह बेहद खूबसूरत है जब आप देखते हैं कि वह किस तरह से कहानियों को एक साथ बुनते हैं। पहले से ही ल्यूक के पहले अध्याय में देखें, स्वर्गदूत गेब्रियल को जकर्याह के पास भेजा गया है।

और फिर बाद में स्वर्गदूत गैब्रियल को मैरी के पास भेजा जाता है। दोनों ही स्थितियों में देवदूतीय दृष्टि प्राप्त करने वाला परेशान होता है। दोनों ही मामलों में देवदूत कहता है, डरो मत।

दोनों ही मामलों में कारण आने वाले चमत्कार को बताया जाता है। बच्चे का नाम दोनों ही मामलों में दिया गया है, जॉन और जीसस। गेब्रियल का कहना है कि बच्चा दोनों ही मामलों में बहुत अच्छा होगा।

जॉन के मामले में, बच्चा अपनी मां के गर्भ से आत्मा से भर जाएगा, और यीशु के मामले में, पवित्र आत्मा के माध्यम से गर्भ धारण किया जाएगा। फिर गेब्रियल प्रत्येक के मिशन की घोषणा करता है। और फिर प्रत्येक मामले में, एक प्रश्न है।

जकर्याह के मामले में, प्रश्न मैरी के मामले की तुलना में कुछ अधिक आपत्ति वाला प्रतीत होता है। फिर कोई प्रमाण या स्पष्टीकरण दिया जाता है। जकर्याह को उसके अविश्वास के लिए चुप करा दिया गया है, और मैरी की उसके विश्वास के लिए प्रशंसा की गई है।

फिर, पात्रों की तुलना और विरोधाभास प्राचीन अलंकार और प्राचीन आख्यान की एक सामान्य विशेषता थी। और मैरी, नाज़ारेथ के इस गांव की यह विनम्र, बहुत छोटी लड़की, भगवान की दृष्टि में बड़ी दिखती है। फिर जकर्याह, जो सकारात्मक रूप से भी देखता है, आप कुछ अच्छे और कुछ बेहतर के बीच तुलना कर सकते हैं, इस बिंदु पर यरूशलेम के महान मंदिर में सेवा करने वाला यह वृद्ध पुजारी कौन है।

और फिर प्रत्येक कथा के अंत में, बच्चा बड़ा होता है। जॉन बैपटिस्ट 180 में बढ़ता है, 240 में 52 में, यीशु बढ़ता है। हमारे पास ल्यूक और एक्ट्स के बीच और वास्तव में एक्ट्स की कुछ अलग-अलग धाराओं के बीच कई समानताएं हैं।

पवित्र आत्मा यीशु पर आता है. यरूशलेम चर्च में पवित्र आत्मा आती है। हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा निरंतर उंडेला जा रहा है।

ल्यूक अध्याय चार में यीशु का उद्घाटन मिशन भाषण, आपके पास प्रेरितों के काम 2 में पीटर के लिए है। आपके पास प्रेरितों के काम 13 में पॉल के लिए है। कई अप्रत्याशित होने के साथ उपचार शक्ति, उनके परिधान को छूने के साथ यीशु से अप्रत्याशित रूप से निकलने वाली उपचार शक्ति।

प्रेरितों के काम अध्याय पाँच में, पतरस की छाया। प्रेरितों के काम अध्याय 19 में, कपड़े या वर्क एप्रन पॉल से लिए गए हैं। इन सभी में एक लकवाग्रस्त व्यक्ति का उपचार, और प्रत्येक मामले में कुछ समान समानांतर भाषा।

प्रत्येक मामले में यहूदी नेताओं का विरोध। प्रत्येक मामले में मृतकों को पुनर्जीवित करना। प्रत्येक मामले में आपके पास एक ईश्वर-भयभीत शतपति भी है।

दो मामलों में आपकी विधवा के बेटे का पालन-पोषण हो रहा है। पॉल के मामले में, यह जवानी में पला-बढ़ा है। मेरा मतलब है, आपके पास जो जानकारी है, आपको उसके साथ चलना होगा, लेकिन जहां वह समानताएं बनाने में सक्षम था, उसने ऐसा किया।

यीशु की यरूशलेम की यात्रा. कुछ भाषाएँ पॉल की रोम यात्रा के बहुत करीब हैं। आपके पास यरूशलेम में यीशु का विजयी प्रवेश है।

जब पॉल रोम जाता है तो उसका विजयी तरीके से स्वागत किया जाता है। संकट आने से पहले ही मंदिर में प्रवेश. आपके पास शत्रुतापूर्ण सद्दकी हैं जो पुनरुत्थान को अस्वीकार करते हैं।

वास्तव में आप यीशु और पॉल दोनों को महासभा के सामने पेश करते हैं। यीशु के साथ महासभा के मामले में, ईश्वर के दाहिने हाथ पर मनुष्य के पुत्र की उत्तेजक घोषणा है। और फिर स्तिफनुस मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिने हाथ होने की उत्तेजक घोषणा भी करता है।

यीशु अपनी आत्मा समर्पित करते हैं, और अपने उत्पीड़कों के लिए प्रार्थना करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे स्टीफन करते हैं, जैसा कि हमने पहले बताया था। सूबेदार ने यीशु की बेगुनाही के बारे में परमेश्वर के सत्यापन को मान्यता दी। मैं जल्दी से बात करने की कोशिश कर रहा हूँ, इसलिए मैं अपनी जीभ बाहर निकाल रहा हूँ, लेकिन मैं जितना संभव हो सके उतना बोलने की कोशिश कर रहा हूँ।

सूबेदार पॉल की बेगुनाही के बारे में भगवान के सत्यापन को पहचानता है। यीशु की चार सुनवाई, और पॉल की चार सुनवाई, दोनों मामलों में निर्दोष घोषित किए गए। और, वैसे, महासभा के साथ, पतरस के साथ, मुझे खेद है, ठीक है, हाँ, पतरस को महासभा के सामने भी दोषी ठहराया गया है, लेकिन पॉल और यीशु के साथ जब उन्हें महासभा के सामने ले जाया जाता है।

यीशु के मामले में, आपके पास अरिमथिया का जोसेफ है। वह महासभा का सदस्य है, लेकिन वह सकारात्मक है। पतरस और अन्य शिष्यों के मामले में, जब आप उस सैन्हेड्रिन खाते के लिए अधिनियमों के अध्याय पाँच में पहुँचते हैं, तो वहाँ एक फरीसी होता है जो उसके लिए खड़ा होता है।

यह फरीसी एक शिष्य नहीं है, लेकिन वह विश्वासियों के लिए खड़ा रहता है, पहला गमलीएल। और फिर जब आप प्रेरितों के काम अध्याय 23 पर पहुँचते हैं, तो महासभा विभाजित हो जाती है। सद्दकी चाहते हैं कि पॉल को फाँसी दी जाए।

वह ऐसे आदमी के रहने लायक नहीं है, लेकिन फरीसी उसके पक्ष में रहते हैं। तो, आपके पास वह समानता है। इसके अलावा, आपके पास कई पीटर-पॉल समानताएं हैं, और आप इनमें से बहुत से विवरणों में जा सकते हैं, हाथ रखने के माध्यम से नेताओं की नियुक्ति इत्यादि।

इसलिए, दोनों झूठे भविष्यवक्ताओं का सामना करते हैं। पॉल को इसे एक से अधिक बार करना होगा। और दोनों ही पूजा को अस्वीकार करते हैं। हेरोदेस अग्रिप्पा में आराधना चाहता हूँ। प्रेरितों के काम अध्याय 12 में, वह पूजा प्राप्त करता है और प्रभु के दूत द्वारा उसे मारा जाता है। लेकिन अध्याय की शुरुआत में प्रभु के उसी दूत ने पतरस को जेल से रिहा कर दिया जहां हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम ने उसे रखा था।

पतरस ने पूजा अस्वीकार कर दी। कोई पीटर के सामने झुकना चाहता है। वह कहते हैं, नहीं, मैं सिर्फ एक इंसान हूँ।

कोई सामने झुकता है, ठीक है, न केवल झुकता है, वे बरनबास और शाऊल, ज़ीउस और हर्मीस, पॉल और बरनबास, हर्मीस और ज़ीउस को बुला रहे हैं। और 1415 में, वे कहते हैं, नहीं, हम आपके जैसे ही इंसान हैं, और वे अपने कपड़े फाड़ देते हैं। इसके अलावा अध्याय 28 में, पॉल को भगवान माना जाता है, लेकिन वह इसे अस्वीकार कर देता है, वास्तव में ऐसा लगता है कि उसे इसके बारे में पता भी नहीं है।

जाहिर तौर पर ल्यूक को इसके बारे में बाद में पता चला। तो, आपके पास कई समानताएं हैं। पतरस और पॉल दोनों को एक यहूदी उत्सव में कैद कर लिया गया, और दोनों को चमत्कारिक ढंग से जेल से रिहा कर दिया गया।

हालाँकि कहानियों के विवरण में अंतर है, मुद्दा यह है कि आप देख सकते हैं कि ल्यूक ने अपने काम को बहुत सामंजस्यपूर्ण तरीके से डिज़ाइन किया है। यह एक साहित्यिक कृति है। और इसलिए, जब हम अधिनियमों की पुस्तक में खातों का अध्ययन कर रहे हैं तो हम इसे ध्यान में रखेंगे।

हम इस प्रकार के कुछ उदाहरण देखेंगे। अब, एक और मुद्दा जो ल्यूक-एक्ट्स में बहुत बड़ा है वह है इंजीलवाद और चर्च स्थापना का मुद्दा। और इसलिए, मैं इसे केवल एक नमूना विषय के रूप में देखने जा रहा हूँ।

अपने पिछले अनुभवों के कारण मुझे स्वयं इसमें कुछ रुचि है। लेकिन कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात इससे संबंधित है, और यही वह है जिसका उल्लेख हमने प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रार्थना के महत्व से पहले किया था। खैर, प्रार्थना अक्सर आत्मा के उंडेले जाने से पहले आती है।

ल्यूक-एक्ट्स में यह अक्सर एक विषय है। ल्यूक 3 में प्रार्थना करते समय यीशु पर आत्मा आती है। प्रेरितों के काम अध्याय 1 में, निस्संदेह, वे प्रार्थना कर रहे हैं। और फिर प्रेरितों के काम 2 में, पिनतेकुस्त के दिन, वे आत्मा से भर गए।

अधिनियम 4, वे एक साथ प्रार्थना कर रहे हैं, और वे प्रार्थना करते हैं, भगवान, कृपया अपना हाथ बढ़ाएं ताकि लोग आपके सेवक यीशु के पवित्र नाम के माध्यम से ठीक होते रहें। और फिर 4.31 में, वे प्रार्थना करते समय साहस से भर गए, और वे पवित्र आत्मा से भर गए। और साथ ही, पतरस और यूहन्ना ने सामरियों के लिए आत्मा प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की, और फिर उन्हें आत्मा प्राप्त हुआ।

प्रेरितों के काम अध्याय 9 और पद 11 में पॉल प्रार्थना कर रहा है, और फिर पद 17 में, वह आत्मा से भर गया है। 10:30 में वे कहते हैं, कुरनेलियुस प्रार्थना कर रहा है, और वह आत्मा से भर गया है। ठीक है, अगर हम इंजीलवाद और चर्च स्थापना के बारे में बात कर रहे हैं, और फिर, ऐसे बहुत सारे अलग-अलग विषय हैं जिन पर हम अधिनियमों के माध्यम से विचार कर सकते हैं, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण विषय है।

पॉल चाहे जहाज पर हो या माल्टा में, वैसा ही है जैसा वह तब होता है जब वह इफिसुस में बड़ी संख्या में लोगों को उपदेश दे रहा होता है। वह एक सेवक है, वह लोगों की सेवा कर रहा है। और हम पॉल के चरित्र के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं।

वह 20:24 में कहते हैं, मामलों को जीवन से भी अधिक महत्व देते हैं। 20.31, वे कहते हैं, मैं प्रत्येक व्यक्ति को आंसुओं के साथ चेतावनी देने जा रहा था। और उस अध्याय में श्लोक 33 से 35 तक, वे कहते हैं, मैं लालची नहीं था।

मैं इसमें पैसे के लिए नहीं था। मैं वास्तव में मिशन का समर्थन करने के लिए काम कर रहा था। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा आप प्रेरितों के काम 3.6 में पीटर और जॉन के साथ देखते हैं, जहां वे कहते हैं, हमारे पास चांदी और सोना कुछ भी नहीं है।

ऐसे माहौल में इस पर ज़ोर देना ज़रूरी था जहाँ बहुत सारे धोखेबाज़ थे। जाहिर है, ये लोग पैसे के लिए ऐसा नहीं कर रहे थे. वे लालच के लिए ऐसा नहीं कर रहे थे.

वे धोखेबाज नहीं थे. वे प्रभु की सेवा के लिये ऐसा कर रहे थे। तो, हम पॉल के चरित्र को देखते हैं।

हम यह भी सीखते हैं कि कैसे प्रचार करना है। और मैं यहां विवरण प्रदान करने में थोड़ा और समय बिताऊंगा। इंजीलवाद और चर्च रोपण बिल्कुल एक ही चीज़ नहीं हैं।

फिलिप धर्म प्रचार करने में बहुत अच्छे थे। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर काम करवाए, लेकिन बाद में वे चर्च को आगे बढ़ाने में टिके नहीं रहे। ऐसे और भी लोग थे जो ऐसा कर सकते थे।

अलग-अलग उपहार हैं. आदर्श रूप से, चीजों को विकसित करने का सबसे अच्छा तरीका लंबी दूरी का गुणन है। रॉबर्ट कोलमैन ने इंजीलवाद पर अपने काम में बताया है कि गुणन अंततः आपको केवल जोड़ की तुलना में अधिक लोगों को देता है।

इसीलिए प्रेरितों के काम की पुस्तक में, हम देखते हैं कि उनके एजेंडे का एक हिस्सा ऐसे शिष्यों की स्थापना करना था जो मिशन को आगे बढ़ा सकें, न कि केवल धर्मान्तरित हों। इसीलिए प्रेरितों

के काम 14:22 में, जब पॉल और बरनबास उन चर्चों के बीच वापस जाते हैं जिन्हें उन्होंने थोड़े समय के लिए स्थापित किया था, तो वे वहां वापस जाते हैं और वे बुजुर्गों की स्थापना करते हैं, नेताओं की स्थापना करते हैं। और उन्होंने प्रेरितों के काम 14.22 में उन्हें चेतावनी दी, बहुत कष्ट के माध्यम से, हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।

आपको उन चीजों के लिए तैयार रहना होगा।' ध्वनि शिक्षण के साथ अनुवर्ती कार्रवाई होनी चाहिए। 15.41 की तरह झूठी शिक्षा के खिलाफ चेतावनी देनी होगी।

तो, मान लीजिए कि हम सिर्फ जोड़ नहीं रहे हैं, बल्कि हम गुणा कर रहे हैं। ठीक है, पहले वर्ष में, यह पूरी तरह से काल्पनिक है, लेकिन यदि आप कुछ समय के लिए इस पर कैमरा रख सकें। पहले वर्ष, यदि आप बाहर जाते हैं और एक शिष्य जीत लेते हैं, तो ठीक है, आपके पास दो शिष्य हैं।

खैर, क्षमा करें, आपने दो शिष्यों को जीत लिया। आप एक जीतते हैं और फिर आप दूसरा जीतते हैं। आपके पास दो लोग हैं जिन्हें आपने प्रभु के पास जीत लिया है।

अगले साल, मुझे पता है, मुझे लगता है कि मैं पहली बार सही था। वैसे भी, अगले वर्ष आपके पास मूल दो हैं, आपके पास आप और वह व्यक्ति हैं जिन्हें आपने प्रभु के लिए जीता है, लेकिन आप में से प्रत्येक ने दो लोगों को प्रभु के लिए जीता है। तो यह है कि आप में से प्रत्येक भगवान के लिए चार जीतता है।

और फिर यह चार प्लस मूल दो है। तो, आपके पास छह हैं। यदि आप अभी तक जोड़ रहे हैं, तो यह उतना अधिक नहीं होगा, लेकिन बहुत जल्द यह बदलने वाला है।

तीसरे वर्ष में, आपको 20 अंक मिले हैं। चौथे वर्ष में, आपको 62 अंक मिले हैं। पांचवें वर्ष में, आपको 188 अंक मिले हैं।

वर्ष 15 को देखें। आपके पास 11 मिलियन से अधिक हैं। अब यह उससे कहीं अधिक है यदि आपने हर साल दो लोगों को मसीह के पास लाया हो।

वह महान होगा। आप चाहेंगे कि 30 लोग ईसा मसीह के पास आएँ। लेकिन उनमें से प्रत्येक भी लोगों को मसीह की ओर आकर्षित कर सकता है यदि आप उन्हें शिष्य बनाते हैं ताकि वे मिशन को आगे बढ़ा सकें।

और वर्ष 22 तक, आपके पास लगभग 16 अरब लोग होंगे। खैर, 2015 में दुनिया की आबादी महज़ 7 अरब थी। मैं ही कहता हूँ, लेकिन इसकी तुलना में 21 साल में ये आठ से नौ अरब के बीच हो सकता है।

लेकिन यह दुनिया की कुल संख्या से भी ज़्यादा लोगों तक पहुंचने जैसा है। अब, निस्संदेह, यह पूरी तरह यथार्थवादी नहीं है। यह एक आदर्श स्थिति है।

अधिनियम हमें दिखाते हैं कि बाधाएँ हैं। वहाँ उत्पीड़न है, वहाँ आंतरिक कलह है, अधिक उत्पीड़न है, अधिक विभाजन है, इत्यादि। लेकिन दूसरी ओर, कौन कहता है कि हम एक वर्ष में केवल दो लोगों को जीत सकते हैं और मसीह का शिष्य बना सकते हैं? उस पर क्यों रुकें? इसलिए, यदि हम बहुगुणित होते हैं, यदि हम न केवल लोगों को मसीह की ओर आकर्षित कर रहे हैं और फिर उन्हें त्याग रहे हैं, बल्कि हम उन्हें मसीह की ओर आकर्षित कर रहे हैं और उन्हें ऐसा करना सिखा रहे हैं और उन्हें विश्वास में दृढ़ होने में मदद कर रहे हैं, तो चीजें चल रही हैं और अधिक बढ़ने के लिए।

खैर, प्रचार कैसे करें? सामग्री बहुत महत्वपूर्ण है, सुसमाचार संदेश। और हम देखते हैं कि सामग्री, भले ही सामग्री नहीं बदली है, सुसमाचार नहीं बदला है, यह प्रासंगिक है।

इसलिए, पॉल आराधनालयों को एक तरह से उपदेश देता है। वह धर्मग्रंथ उद्धृत कर रहा है। किसानों के लिए दूसरा रास्ता।

वह जो कहता है वह शास्त्रसम्मत है, लेकिन इसमें धर्मग्रंथ का एक उद्धरण भी है, लेकिन वे इसे नहीं जानते होंगे। वह इसकी पहचान इस रूप में नहीं करता। पॉल किसानों को उस ईश्वर के बारे में उपदेश देते हैं जो हमें बारिश और फलदायी मौसम देता है।

वह प्रेरितों के काम अध्याय 17 में दार्शनिकों और दार्शनिक रूप से शिक्षित शहर के नेताओं से ऐसे तरीकों से बात करता है जो उनके संदर्भ में समझ में आने योग्य हों। लेकिन केंद्रीय संदेश पूरे अधिनियम की पुस्तक में बना हुआ है। यीशु मर गये और फिर से जी उठे।

और जब आप गैर-एकेश्वरवादियों से बात कर रहे होते हैं, तो आप एक सच्चे ईश्वर के बारे में भी बात करते हैं। अब, हम लोगों का ध्यान कैसे आकर्षित करें? हमें रचनात्मक और विशेष रूप से रणनीतिक रूप से सोचने की जरूरत है। हमें अपनी संस्कृति के उद्घाटन के बारे में सोचने की जरूरत है।

हमें प्रासंगिक बनाने की जरूरत है। हमें स्थानीय संस्कृति को अनुमति देने की आवश्यकता है। और यह कुछ ऐसा है जो पॉल ने अधिनियम 15.20 में किया। जेसुइट्स ने ऐसा तब किया था जब वे पहली बार चीन में सुसमाचार साझा कर रहे थे, लेकिन फिर इसे उस समय के वेटिकन द्वारा बंद कर दिया गया क्योंकि कुछ अन्य लोग जेसुइट्स के बारे में शिकायत कर रहे थे।

घर पर थोड़ी राजनीति चल रही थी। और इसके कारण चीन में जेसुइट्स की गवाही कई पीढ़ियों के लिए बंद हो गई। पॉल ने शायद ही कभी मसीह के बारे में बोलने का कोई अवसर छोड़ा हो।

वह इसे प्रासंगिक रूप से प्रासंगिक तरीकों से देने की कोशिश करेगा, लेकिन उसने शायद ही कभी मसीह के बारे में बोलने का कोई मौका छोड़ा हो। उन्होंने सुसमाचार को केवल संक्षेप में पेश किया जहां उन्हें तुरंत बाहर निकाल दिया गया। कभी-कभी ऐसा हुआ, उदाहरण के लिए, चीन अंतर्देशीय मिशन के साथ, लेकिन वह जहां संभव हो सके वहां अधिक समय तक रुके।

कुरिन्थ में 18 महीने, और इफिसुस में ढाई वर्ष। उन्होंने लोगों से परिचय प्राप्त किया। उन्होंने संस्कृति को जाना।

अध्ययनों से पता चला है, कम से कम संयुक्त राज्य अमेरिका में, कि एक चर्च वास्तव में तब फलता-फूलता है जब एक पादरी कम से कम कुछ वर्षों के लिए समुदाय का हिस्सा होता है, विशेष रूप से पांच साल या उससे अधिक के लिए क्योंकि पादरी समुदाय को जानता है, समुदाय पादरी को जानता है, और इसी तरह। अब, पॉल अक्सर स्थानीय मंडलियों के भीतर नेताओं को खड़ा कर रहा था, इसलिए वे समुदाय को पहले से ही जानते थे। लेकिन समुदाय में कुछ समय बिताने से जहां संभव हो वहां अधिक स्थिरता मिलती है।

फिर, अलग-अलग उपहार और अलग-अलग बुलाहटें हैं। आराधनालय। पहले से ही एक ईश्वर में विश्वास था, इसलिए यह एक तरह से रणनीतिक था कि आराधनालयों में लोगों के साथ उनका पहले से ही संबंध था।

आराधनालय भी धर्मग्रंथों का उपयोग करते थे। यदि आप अन्यजातियों तक पहुंचना चाहते हैं, ठीक है, जो अन्यजाति एक सच्चे ईश्वर में विश्वास करते थे, उनके आराधनालयों में घूमने की सबसे अधिक संभावना थी, या यहां तक कि कभी-कभी एक सबसे महान ईश्वर में, यदि वे मानते थे कि वह इज़राइल का ईश्वर था, तो वे फ्रांसी पर चढ़ जाएंगे। आराधनालय में बाहर. सार्वजनिक चर्चा मंच भी थे।

उदाहरण के लिए, सड़क पर, अधिनियम 14:9, पॉल सड़क पर उपदेश देता हुआ प्रतीत होता है। उस समय इसकी अनुमति थी। उस समय यह समझा जाता था कि आप ऐसा कुछ कर सकते हैं, इसलिए यह एक सांस्कृतिक मंच था जो इसके लिए उपलब्ध था।

शिक्षित ईसाई उस पद्धति का अधिक उपयोग करने लगे। आप देखते हैं कि शिक्षित और अशिक्षित दोनों ही कभी-कभी संकेत और चमत्कार सुसमाचार की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। आपके पास पीटर के साथ ऐसा है, जो एक मछुआरा है, जिसने कुछ शिक्षा प्राप्त की होगी, लेकिन निश्चित रूप से पॉल के स्तर की नहीं।

और आप इसे पॉल के साथ देखते हैं। अपोलोस शिक्षित है। आपके पास उसके साथ कोई संकेत और चमत्कार दर्ज नहीं हैं, जैसे कि आपके पास जॉन द बैपटिस्ट के साथ नहीं है।

लेकिन फिर भी, अपोलोस बौद्धिक रूप से अच्छी तरह से प्रशिक्षित है। इसलिए वह, स्टीफन और पॉल इन सार्वजनिक बहस सेटिंग्स में उभरते हैं जहां वे इस तरह से लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। कुछ निश्चित मंच थे जो संचार के लिए उपलब्ध थे।

पॉल दार्शनिकों के साथ ऐसा करता है। वह उन दार्शनिकों के साथ तर्क कर रहा है जो आसपास खड़े होकर एक-दूसरे के साथ नई अवधारणाओं के बारे में बात करना पसंद करते हैं। तो प्रेरितों 17:18 में पॉल ऐसा कर रहा है। फिर वे उसे एरीओपगस, नगर परिषद, शायद लगभग सौ लोगों के सामने लाते हैं, और उसे वहां अपना मामला पेश करने का अवसर मिलता है।

अधिनियम 19.9, पॉल ने टायरानस के स्कूल में व्याख्यान के लिए एक स्थान स्थापित किया। जाहिर तौर पर यह किसी दार्शनिक स्कूल जैसा दिखता है। पॉल के दिनों में, जब बाहरी लोग ईसाई धर्म को देखते थे, तो वे आमतौर पर इसे एक धर्म के रूप में नहीं सोचते थे क्योंकि इसका कोई पंथ नहीं था।

माफ़ करें। इसमें बलिदान नहीं थे। इसके बजाय उनके पास यह था कि वे व्याख्यान देंगे, संवाद करेंगे, इत्यादि।

ठीक है, पॉल कहते हैं, ठीक है, बाहर के लोग इसे एक दार्शनिक विद्यालय के रूप में देखेंगे। कुछ लोगों ने आराधनालय को इसी तरह देखा। पॉल कहते हैं, ठीक है, वे हमें इसी तरह देखते हैं।

हम उसका उपयोग अपने लाभ के लिए कर सकते हैं। और इसलिए, वह उस तरह से पढ़ाते हैं। वह सुसमाचार को बाहर निकालने के लिए संबंधपरक नेटवर्क का भी उपयोग करता है, और अन्य लोग सुसमाचार को बाहर निकालने के लिए संबंधपरक नेटवर्क का उपयोग करते हैं।

और हम अगले सत्र में इसके बारे में और अधिक बात करेंगे।

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 5 है, चमत्कार और सुसमाचार प्रचार।